[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3427

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

शास्त्रीय नृत्यों में नवीन प्रयोग

डॉ. टीना तांबे
शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इंदौर

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। प्रकृति में विद्यमान कोई भी तत्व इस प्रक्रिया से अछूता नहीं रह पाया है। रहन–सहन, खान–पान, आचार–विचार, मान्यताए, मानसिकता, नैतिक मूल्य आदि तथा सामाजिक व सांस्कृतिक परिदृश्य के प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन दृश्यमान है। प्राकृतिक परिवर्तन तो नैसर्गिक रूप से होते रहते है परंतु अन्य कई क्षेत्रों में यह परिवर्तन मानव की सृजनात्मक प्रवृत्ति के फलस्वरूप उत्पन्न होते है जिसमें प्रमुख है "कला" क्षेत्र। सृजन करना मानव का नैसर्गिक गुण है तथा नवीनता की खोज उसकी मूल प्रवृत्ति। यही प्रवृत्ति जब निपुणता, कार्य कौशल, प्रतिभा व सौन्दर्यबोध से प्रयुक्त होकर सृजन को नित–नवीन नयनाभिराम आवरण पहनाती है तब उसे हम कला कहते है। ललित कलाओं के अंतर्गत आने वाली पंचकलाओं में से एक है संगीत कला तथा संगीत कला के अंतर्गत आने वाली कलाओं में से एक है नृत्य कला। भारतीय संस्कृति में नृत्य को ईश्वर की उपासना का माध्यम समझा गया है, यह ईश्वर से ही उत्पन्न हुआ है व इसका आधार धर्म व आध्यात्म ही माना गया है। चार वेदों के प्रमुख तत्वों को ग्रहण कर पंचम वेद के रूप में निर्मित "नाट्य वेद" में नृत्य को व्यवस्थित, शास्त्रोक्त व नियमबद्ध स्वरूप प्राप्त हुआ तथा यहीं से शास्त्रीय नृत्यों की समृद्ध परंपरा का आरंभ हुआ। शास्त्रीय नृत्य आरंभ से ही एकल प्रयोज्य रहे है, इनका प्रयोग मंदिरों में ईश्वर उपासना हेतु हुआ तथा आज आधुनिक समाज में ये नृत्य एक नयी दृष्टि व नवीन स्वरूप के साथ सामाजिक रंगमंच पर नए प्रेक्षकों के समक्ष उपस्थित हुये है। प्राचीन काल से आधुनिक काल के इस प्रवास में इन नृत्यों ने अनेक उतार चढाव व बदलाव देखे तथा समयानुरूप नवीन परिस्थितियों में नए दर्शको के समक्ष अवतरित होने हेतु इन्हें अनेक नवीन कलेवर धारण करने पडे। शास्त्रीय नृत्यों के नवीन सृजन, नवीन प्रयोग व नवीन प्रवृत्तियों के इस प्रवास पर कुछ प्रकाश डालने का यह एक प्रयास है।

जो भी परंपरानुसार चला आ रहा है, उससे हटकर किसी नई चीज की खोज, अभ्यास तथा प्रदर्शन किया जाए उसे ही हम प्रयोग कहेंगे। नवीन सृजन के तीन स्तर याने उसकी रचना, विधी और व्यवहार यह तीनों मिलकर प्रयोग या एक्सपेरिमेंट कहे जाते है।

एकल से युगल व समूह की ओर – शास्त्रीय नृत्य का प्रदर्शन हमेशा से एकल रूप में ही होता आया है परंतु बदलते समय के साथ प्रेक्षकों की मांग, समझ व रुझान को ध्यान में रखते हुये युगल, त्रयी (ट्रायो) या समूह में नृत्य प्रदर्शन होने लगे है। दो, तीन या उससे अधिक संख्या में नृत्य कलाकार उपस्थित होने पर प्रस्तुति में अधिक ऊर्जा, आकर्षण, प्रभाव व संभावनाए उत्पन्न होती है। साथ ही नव नवीन संरचनाए (फोर्मेशंस), पात्रों का निर्धारण, अनुरूप वेषभूषा व नृत्य संरचना (कोरियोग्राफी) में प्रयोग की संभावनाए व्यापक रूप से बढ जाती है। इसीलिए आज हम देखते है की लगभग सभी प्रमुख नर्तकों के अपने समूह है व अनेक नर्तकों ने अपनी डांस कंपनी स्थापित की है जिनमे सामान्यतः उन्ही के शिष्यों का समावेश होता है साथ ही साथ बाहर से प्रतिभावान नर्तकों का चयन कर उन्हे भी सम्मिलित किया जाता है। वर्तमान में प्रचलित सफल डांस कंपनीज में उल्लेखनीय है रतिकान्त मोहपात्रा का सृजन समूह, अदिति मंगलदास डांस कंपनी, सरोजा वैद्यनाथन एवं समूह, गुरु बिपिन सिंह का मणिपुरी नर्तनालय समूह तथा अनेक स्थापित कलाकारों के समूह कदंब, कैशिकी, कार्तिक, सांख्य आदि नामों से कार्यरत हैं। इसी श्रंखला को आगे बढाते हुये युवा कलाकार भी प्रारम्भ से ही अपने समूह स्थापित कर निनाद, शिवोहम, बीज आदि नामों से डांस कंपनीज प्रारम्भ कर चुके है व कर रहे है।

वेशभूषा, वाद्यवृंद, मंच, ध्वनि, प्रकाश व्यवस्था व नृत्य सरं चना (कोरियोग्राफी) मे नवीन प्रयोग – नवीन प्रयोगों के अंतर्गत प्रस्तुति को अधिकाधिक प्रभावशाली बनाने का प्रयास वेषभूषा, वाद्यवृंद, मंच सज्जा, ध्वनि व प्रकाश व्यवस्था तथा कोरियोग्राफी आदि के माध्यम से किया जा रहा है। पारंपरिक वेषभूषा में समयानुकूल व यथायोग्य बदलाव कर उन्हें अधिक आकर्षक तथा पात्र व कथानक के अनुरूप बना दिया गया है, साथ ही केश सज्जा, मुख सज्जा, आभूषण व अन्य मंच सामग्री (प्रोप्स) में नवीनता लाकर प्रस्तुति का प्रभाव बढाया जाता है। उदाहरणार्थ शेक्स्पीयर के उपन्यास पर आधारित पंबिरजू महाराज की नृत्यनाटिका रोमियो–जूलियट में एलिजाबेथ एरा के यूरोपियन पोशाखों का प्रयोग किया गया व मंच पर यूरोपियन वास्तुशिल्प को उभारकर प्रभाव को द्विगुणित कर दिया गया। इसी तरह काल एवं कथानक के अनुरूप मंच सज्जा याने सेट्स, बेकड्रोप, मल्टीलेवल स्टेज यह सारे प्रयोग प्रस्तुति के प्रभाव में वृद्धि तथा कलाकार के श्रम की बचत करते है। स्क्रीन–प्रॉजेक्टर के उपयोग से बॅकड्रॉप पर ए–वी क्लिपिंग्स का प्रदर्शन भी मंच व्यवस्था में उल्लेखनीय है। उदाहरणार्थ हेमामालिनी द्वारा मंचित

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

नृत्य नाटिका "राधा रास बिहारी" में रास का दृश्य दिखने हेतु पीछे बडी स्क्रीन पर पूर्ण चन्द्र, यमुना नदी व वृंदावन का दृश्य दिखाया गया, कुछ ऊंचाई पर वास्तविक झूले का प्रयोग जिस पर राधा कृष्ण बैठे है, व दूसरी और नीचे गोपियों का समोह कृष्ण के साथ रास नृत्य कर रहा है। मंच सज्जा में इस प्रकार के प्रयोगों द्वारा प्रस्तुति को एक नयी ऊंचाई दी जा रही है।

नवीनता के इस दौर में वाद्यवृंद व ध्वनि प्रयोजन के क्षेत्र में भी अनेक बदलाव आए है। पारंपारिक वाद्यों के साथ सिंथेसाइजर, इलेक्ट्रोनिक गिटार, ड्रम्स आदि का उपयोग कर अथवा सम्पूर्ण प्रदर्शन के संगीत की रिकॉर्डिंग स्पेशल इफेक्ट्स के साथ करके उपयोग की जाती है। इनमे बादल, बारिश, तूफान, घंटियों, पक्षियों आदि के ध्वनि का प्रयोग आसानी से जोड लिया जाता है। इसके विपरीत गुरु क्षमा भाटे द्वारा निर्मित एक नृत्य संरचना ऐसी भी है जिसमे किसी भी प्रकार के वाद्य या ध्वनि उपकरण का प्रयोग नहीं किया गया है। केवल पैरों की थाप, घुंगरुओं के आवाज, अंग भंगिमाएँ, ताली व स्क्रीन पर दिखाए गए क्लिपिंग्स से ही पूरा प्रभाव उत्पन्न करना ही इस सृजन की विशेषता है जिसका नाम है "निशब्द भेद"। ध्वनि के साथ साथ प्रकाश व्यवस्था के कुशल प्रयोग से जहां प्रस्तुति के प्रभाव में चार चाँद लग जाते हैं वहीं दर्शक को एक चमत्कारिक अनुभूति प्राप्त होती है। उदाहरणार्थ देवी के महाशक्ति स्वरूप व कृष्ण के विराट रूप को लाइट्स की सहायता से चमत्कारिक बनाया जा सकता है। अतः आधुनिक काल के नर्तक अपनी प्रस्तुतियों में अलग अलग प्रभाव उत्पन्न करने हेतु लाइट्स का बहुतायत से प्रयोग करने लगे है। अक्रम खान,अदिति मंगलदास,असताद देबू आदि सभी कलाकार अपनी प्रस्तुतियों मे लाइट्स का सर्वोत्कृष्ठ उपयोग करते हैं ।

प्रस्तुतीकरण के प्रसंग में नृत्य संरचना का सर्वाधिक महत्व है। इसके अंतर्गत नवीन व कठिन भावभंगिमाएँ, संरचनाएं, भ्रमरी, उछाल, विशिष्ट प्रकार की कलाबाजियाँ इस्तेमाल कर नर्तक प्रेक्षकों की प्रशंसा प्राप्त करना चाहता है। समय के अभाव में नर्तक को अपने प्रदर्शन की सारी विशेषताएँ अलग अलग फूलों के गुलदस्ते के समान सजाकर दर्शकों को रिझाना होता है ऐसे में आधुनिक नर्तक कोरियोग्राफी के सारे सिद्धांतों का कुशल प्रयोग कर प्रस्तुति को सुदृश्य व अविस्मरणीय बना देता है। प्रयोग के तौर पर नर्तकों ने दो या अधिक शास्त्रीय अथवा शास्त्रीय के साथ पाश्चात्य नृत्यों की जुगलबंदी के भी सफल प्रयास किए है जिनमे उल्लेखनीय हैं – गुरु प्रताप पवार द्वारा कथ्थक और फ्लेमिंकों नृत्य की जुगालबंदी तथा गुरु रोहिणी भाटे व कलानिधि नारायनन द्वारा प्रस्तुत अभिनय संगम जिसमे कथ्थक एवं भरतनाट्यम के फ्यूजन द्वारा नायिकाओं की विभिन्न छबीयां दिखाई गई हैं ।

कथानक व विषय वस्तु मे नवीन प्रयोग – उपर्युक्त सभी तत्व नृत्य प्रस्तुति के महत्वपूर्ण अंग हैं परंतु प्रस्तुति की सफलता पूर्णतया उसके कथानक या विषयवस्तु (कंटेन्ट) पर निर्भर करती है। इसीलिए इस क्षेत्र में हमें सर्वाधिक सृजनात्मक व नवीन प्रयोग दिखाई देते हैं। वैश्वीकरण के दौर में नृत्य प्रस्तुतियों को आधुनिक प्रेक्षकों के अनुकूल बनाने हेतु कलाकार कथावस्तु को लेकर सर्वाधिक जागरूक हैं। पिछले कुछ दशकों में कथानकों को लेकर सराहनीय बदलाव देखा गया है, राधा कृष्ण से लेकर रोमियो जूलियट तक, द्रौपदी वस्त्रहरण से निर्भया कांड तक, देवी शक्ति से नारी शक्ति तक, ऋतुवर्णन से पर्यावरण जागरूकता तक, पनिहारिन से नर्मदा–कावेरी की कहानियों तक, रावणवध से हमारे भीतर छुपे बुराई रूपी रावण के सर्वनाश तक कलाकारों नें साहित्यिक, सामाजिक, दार्शनिक व नैतिक ऐसे सभी विषयों को छूने का प्रयत्न किया है।

शास्त्रीय नृत्यों का प्रदर्शन मुख्यतः दो भागों मे किया जाता है, नृत्त पक्ष व अभिनय पक्ष। एक ओर जहां नृत्त पक्ष में आज भी पारंपरिक प्रस्तुतियों का ही चलन है, वहीं दूसरी ओर अभिनय पक्ष के विषय वस्तु में अपार वृद्धि हुई है। नृत्त पक्ष को आकर्षक बनाने हेतु पारंपरिक भावभंगिमाओं को ही अधिक तीव्र, ऊर्जावान व तेजी तैयारी युक्त बना दिया गया है परंतु इसमें कोई उल्लेखनीय बदलाव दिखाई नहीं देता। वहीं अभिनय पक्ष में नर्तक नित नवीन विषयों पर प्रयोग कर रहे हैं तथा पिछले कुछ दशकों में नवीन प्रयोगों की एक पूरी श्रंखला तैयार हो गयी है। एक ओर तो नायक नायिका भेद, गजेंद्र मोक्ष, जटायु मोक्ष, दशावतार, नवरस आदि पारंपरिक विषय आधुनिकता के स्पर्श के साथ प्रस्तुत किए जा रहे हैं, वहीं दूसरी और नारीशक्ति, जातिप्रथा, पर्यावरण संरक्षण, भ्रूणहत्या, हृदय के भीतर का द्वंद, परमात्मा से एकाकार, विश्वशांति आदि विस्तृत विषयों को भी नृत्य के माध्यम से दिखाया जाने लगा है। पारंपरिक शास्त्र व बन्दिशों के अलावा सूर, तुलसी, कबीर, मीरा से लेकर जयदेव, निराला, हरिवंशराय बच्चन तथा अटलबिहारी बाजपेयी की रचनाओं तक का प्रयोग किया जा रहा है । संत रामदास, तुकाराम, जनाबाई और एकनाथ के अभंगों से लेकर बुल्लेशाह और अमीर खुसरो तथा गुलजार व जावेद अख्तर तक की शायरी व कलामों का उपयोग किया जा रहा है। जिन विषयों पर गीत उपलब्ध नहीं हैं, उन पर विशेष रूप से गीत लिखवाये जाते हैं। नवीन विषयों के चयन के साथ ही आवश्यता पडती है नवीन मुद्राओं व अंगभंगिमाओं की, क्यूंकि हमारे शास्त्रीय नृत्यों का मुद्रा विधान व आंगिक अभिनय प्राचीन एवं मध्यकालीन विषय वस्तु के ही अनुकूल है। इस चुनौती को स्वीकार करते हुये नर्तकों ने विधिगत प्रयोग कर नवीन मुद्राओं, अंगभंगिमाओं व संरचनाओं का सृजन किया व उन्हें वेषभूषा, केश व मुखसज्जा,

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

ध्वनि–मंच व प्रकाश उपकरणों तथा रंगमंच की सामाग्री (प्रोप्स) के उपयोग द्वारा इन विषयों के प्रस्तुतीकरण को संभव व प्रभावी बनाया है। इस श्रंखला में उल्लेखनीय प्रयोग है शुभदा व्हराडकर द्वारा निर्मित नृत्य संरचना "मयूरपंख" तथा रतिकान्त मोहपात्रा द्वारा निर्देशित लघु नृत्यनाटिका "द सेगी बेगी एलिफंट"।

शास्त्रीय नृत्यों के सृजनात्मक क्षेत्र में आधुनिक युग की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि है नृत्यनाटिकाओं की संरचना एवं प्रयोग, जिनका सृजन बीसवीं शताब्दी के चौथे दशक से लेकर आज तक हो रहा है। यह प्रस्तुतियाँ आधुनिक व आम दर्शक को सर्वाधिक आकर्षित करती है। अब तक चर्चित सभी तत्व जैसे कथानक, मंचसज्जा, वेषभूषा, वाद्यवृंद, ध्वनि–प्रकाश व्यवस्था व कोरियोग्राफी इन सभी का समग्र रूप से सर्वोत्कृष्ट उपयोग नृत्यनाटिकाओं में ही दृश्यमान होता है। अपने आप में सम्पूर्ण ये संरचनाएं आधुनिक व आम दर्शकों को शास्त्रीय नृत्यों से पूर्णतः एकाकार करती है व उन्हें आकर्षित करती है। नृत्य नाटिकाओं के सृजन में कुछ उल्लेखनीय प्रयोग हैं:

1) श्रीराम भारतीय कला केंद्र द्वारा निर्मित – राम, कृष्ण, दुर्गा, कर्ण, मीरा, कामायनी व खजुराहो
2) हेमा मालिनी द्वारा मंचित – द्रोपदी, यशोदा, महालक्ष्मी, राधा रास बिहारी, मीरा व दुर्गा
3) रतिकान्त मोहापात्रा द्वारा निर्मित – गीतामृत, कृष्णलीला व सेगी बेगी एलिफंट
4) सरोजा वैद्यनाथन द्वारा निर्मित – दशावतार
5) डॉ सुचित्रा हरमलकर द्वारा निर्मित – स्त्री शक्ति व नर्मदा
6) अदिति मंगलदास द्वारा निर्मित – अनचार्टेड सीज, विदिन, टाइमलेस इत्यादी

यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि उपर्युकत सभी प्रयोग मुख्यतः गत दो दशकों में किए गए हैं परंतु उससे पूर्व भी मेडम मेनका, प्रो. मोहनराव कल्याणपुरकर, लच्छु महाराज, उदय शंकर, बिरजू महाराज, डॉ. पुरू दधीच, रोहिणी भाटे, कलानिधि नारायणन, गुरु बीपिन सिंह आदि ने नृत्य नाटिकाओं के क्षेत्र मे नवीन प्रयोगों की एक अमूल्य धरोहर शास्त्रीय नृत्यों को प्रदान की है। आज की पीढी के युवा नर्तक भी इस कार्य को नितनवीन प्रयोगों द्वारा आगे बढाने को तत्पर है। इनमें वैभव आरेकर की अभंगरंग, संयुक्ता वाघ द्वारा प्रस्तुत कबीर व डॉ. टीना तांबे द्वारा निर्मित ऋतुश्रंगार व द्वैत से अद्वैत उल्लेखनीय है। एक बात और स्पष्ट करना आवश्यक प्रतीत होता है कि कथ्थक में लोकधर्मी तत्व की अधिकता होने के कारण शास्त्रों के बंधन कम और प्रयोग की संभावनाएं विस्तृत हो जाती है, इसीलिए अन्य नृत्य शैलियों की तुलना में कथ्थक में सर्वाधिक नवीन प्रयोग दृष्टिगोचर होते है तथा लेखक स्वयं कथ्थक से समबद्ध होने के कारण कथ्थक प्रयोगों का उल्लेख इस लेख में प्रमुखता से किया गया है।

उपर्युक्त सभी तत्वों में समयानुकूल परिवर्तन कर आज के नृत्यकारों ने सभी चुनौतियों को स्वीकार कर व हर कसौटी पर खरा उतरकर प्रस्तुतियों को नए आयाम प्रदान किए हैं, उन्हें अधिक आकर्षक व प्रभावशाली बनाया है, आधुनिक प्रेक्षकों को आकर्षित किया है व सम्पूर्ण नृत्य प्रस्तुति को एक नया परिदृश्य प्रदान कर युगचेतना के प्रति अपनी जागरुकता का परिचय दिया है। शास्त्रीय नृत्यों के लिए ये सारे प्रयास, सृजन व प्रयोग अत्यंत ही सकारात्मक परिदृश्य निर्माण करते हैं।

संदर्भ –

1 *नृत्य निबंध एवं कथ्थक नृत्य शिक्षा (डॉ पुरू दाधीच एवं डॉ विभा दधीच)*